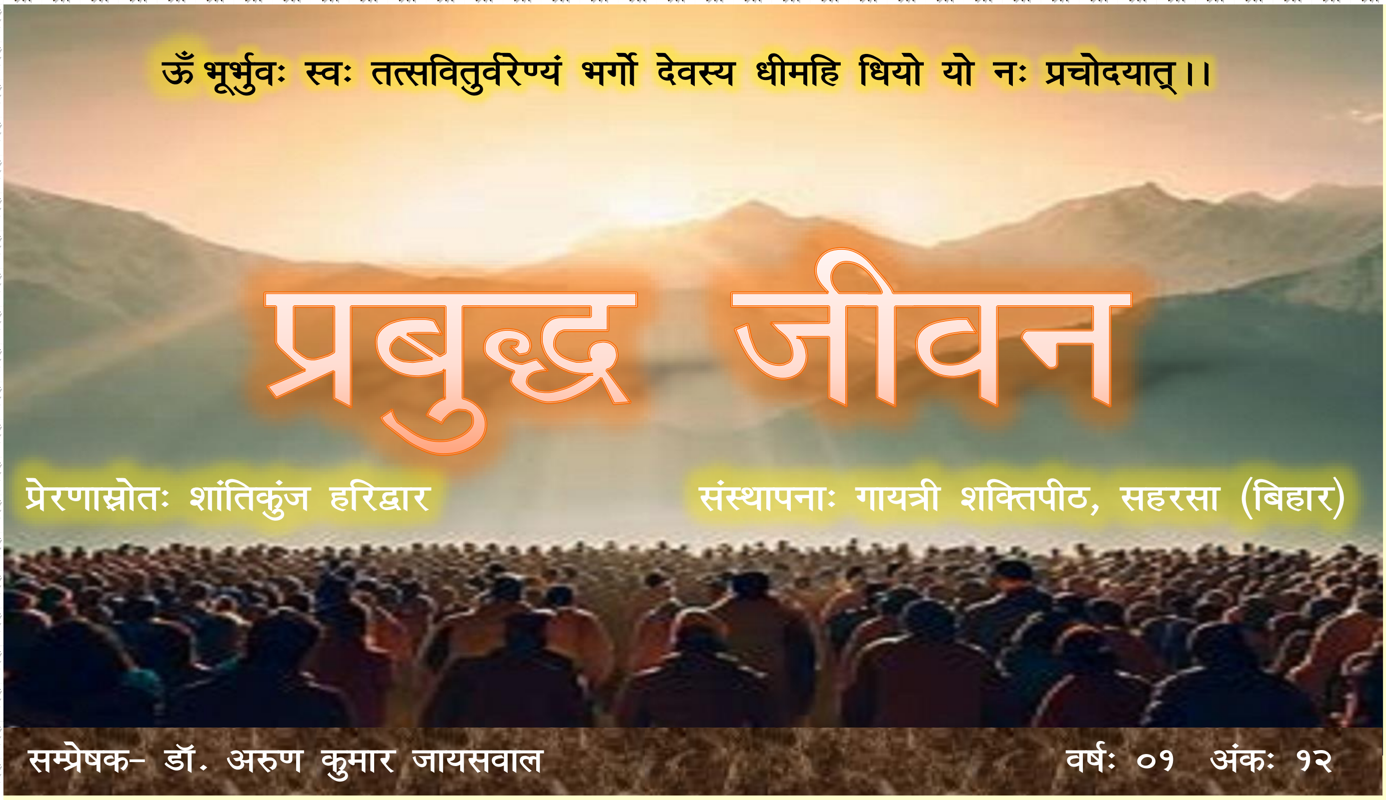

‘धियो’

‘धियो’ शब्द गायत्री महामंत्र का मंत्रसार है। गायत्री की समस्त साधना जैसे इसी प्रयोजन के लिए है। इसी शब्द में मानव व मानवता की समस्त समस्याएँ हैं और इसी शब्द में मानव व मानवता की समस्त समस्याओं के समाधान भी निहित हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि धियो शब्द का अर्थ ही बुद्धि, बौद्धिकता एवं विचार प्रक्रिया है। इसकी मलिनता से ही सारी समस्याएँ उपजी और पनपी हैं।

इस मलिनता के कारण ही बुद्धि कुटिलता व धूर्तता का परिचय व पर्याय बन गयी है। वर्तमान समय में जो जितना तिकड़मबाज है, वह उतना ही बुद्धिमान है। बुद्धि जो कि मानव जीवन को परमात्मा का श्रेष्ठतम वरदान है, उसके अर्थ की इतनी अनर्थकारी समझ केवल इसलिए है क्योंकि मानव बुद्धि मलिन व भ्रमित है। बुद्धि की इस मलिनता व भ्रमित स्थिति ने ही मानव जीवन के सभी आयामों में समस्याओं का अम्बार खड़ा कर दिया है।

इस स्थिति को बदलना तभी सम्भव है, जब मानवीय बौद्धिकता को गायत्री के भर्ग का स्पर्श मिले। ध्यान रहे कि जब समस्या चेतना के तल में पनपी है, तो इसके समाधान भी चेतना की चैतन्यता से ही उपजेंगे। पदार्थ विज्ञान की कोई भी कारीगरी इसमें कारगर साबित न हो सकेगी।

इसके कारगर समाधान के लिए गायत्री महामंत्र की गायत्री चेतना ही उपयोगी है। गायत्री चेतना का निरन्तर संस्पर्श मनुष्य को व्यक्ति, परिवार व समाज के तीनों आयामों में बुद्धि के परिष्कार, परिमार्जन का अनुदान दे सकेगा। गायत्री महामंत्र के इस शब्द की सामर्थ्य ने ही तो गायत्री महामंत्र को सद्बुद्धि प्रदाता मंत्र बनाया है।

हृदय से हृदय तक

जिनके स्मरण मात्र से हृदय में पवित्रता और प्रकाश की लहरें उमड़ने लगती हैं, जो जीव को लोक-परलोक, दोनों लोकों में त्राण देती हैं, उनके लिए वृहन्नारदीय पुराण के अध्याय-६ में कहा गया है- गायत्री जाह्वी चोभे सर्वपापहरेस्मृते। एतयोर्भक्तिहीनो यस्तं विद्यात्पतितं द्विज।। अर्थात् हे मनुष्यों! गायत्री और गंगाजी, ये दोनों सब पाप हरने वाली हैं। इनकी भक्ति से जीवन कभी भी पतित नहीं होने पाता। गायत्री और गंगा, दोनों ही दुर्लभ देवतत्वों का आविर्भाव एक ही दिन ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को हुआ। इस दृश्य गंगा और अदृश्य गायत्री में बड़ा ही साम्य है।

पापों के प्रायश्चित और पवित्रता संवर्धन के लिए गंगा का अवगाहन किया जाता है। गंगा अंतस में पवित्रता भरती है और पापकर्मों से निवृत्ति प्रदान करती है, लेकिन गायत्री पाप-प्रवृत्ति को ही निर्मूल कर देती है। गायत्री से अंतःकरण पवित्र होता है, कषाय-कल्मषों के कुसंस्कारों से त्राण मिलता है। अपने स्थूल और सूक्ष्म स्वरूप में दोनों ही पवित्रता का महान अनुदान प्रदान करती हैं।

गंगाजल दिखने में भले ही सामान्य जल के समान प्रतीत होता है, परंतु सूक्ष्मदृष्टिसंपन्न ही इसकी दिव्यता और पवित्रता का सत्य जानते हैं। कहे जाने के लिए हिमालय की दिव्य जड़ी-बूटियाँ इसमें घुली होने के कारण जनसामान्य के लिए यह एक श्रेष्ठ औषधि के रूप में समझा जाता है परंतु सत्य तो यही है कि इसके प्राणों में हिमालय के आंगन में स्थूल व सूक्ष्म रूप से किए जा रहे महातपस्वियों का तप प्रवाहित होता है। यही नहीं, पर्व विशेष तो गंगा की जलधारा ब्रह्मांडीय ऊर्जा को प्रवाहित करने का भी माध्यम बन जाती है। इसीलिए पर्व विशेष में गंगास्नान का महत्व बढ़ जाता है।

इसी प्रकार गायत्री मंत्र सामान्य रूप से २४ अक्षरों का समूह मात्र लगता है लेकिन इसकी साधना करने वाले महासाधकों का अनुभव यही कहता है कि गायत्री सृष्टि की आदिशक्ति है। गायत्री मंत्र में ज्ञान-विज्ञान इतना अधिक है कि इसकी विधिवत साधना से सृष्टि में जो कुछ भी प्राप्य है, वह प्राप्त होता है। वेदों में जो ज्ञान-विज्ञान भरा पड़ा है, वह सबका सब बीज रूप में गायत्री मंत्र में विद्यमान है। तमाम देवशक्तियाँ इसी महाशक्ति की धाराएँ हैं। उनका प्रादुर्भाव इसी से हुआ है और वे इसी से पोषण पाती है। इस रूप में गायत्री देवमाता है। इतना ही नहीं समूचे विश्व की उत्पत्ति इसी के गर्भ से हुई है, यही कारण है कि गायत्री विश्वमाता भी है। व्यक्ति में सद्‌बुद्धि एवं सद्‌भाव जगाने वाली यह महाशक्ति वस्तुतः धरती की कामधेनु है, जो उनका पयपान करने वालों के दुःख संताप एवं अभाव का हरण करती है। उन्हें सुख-शांति एवं समर्थता का अनुदान देती है।

सत्य भी यही है कि भारतीय संस्कृति, धर्म और आत्मविज्ञान की आधार भूमि गायत्री रही है। प्राचीनकाल में ऋषियों ने इसी महाशक्ति की उपासना करके संसार को ज्ञान-विज्ञान की आभा से आलोकित किया था। प्राचीन भारत में जो महानता थी, उसके मूल में साधना से उत्पन्न आत्म-शक्ति ही प्रधान थी। तब यह देश अपने आचरण और आंतरिक बल के कारण संसार का प्रकाश-स्तंभ बना हुआ था और जगद्‌गुरु कहलाता था। इस रूप में इसकी भावी प्रतिष्ठा का आधार भी यही होगा। परमपूज्य गुरुदेव का समूचा जीवन इसी महालक्ष्य के लिए समर्पित रहा। वे स्वयं वेदमाता गायत्री की महिमामय तेजोमूर्ति बने रहे। पतितपावनी माँ गंगा और आदिशक्ति माँ गायत्री आपके जीवन के त्रिविध संतापों का नाश कर पवित्रता का आशीष और श्रेष्ठता का पथ प्रदान करें। इसी प्रार्थना के साथ-

अरुण कुमार जायसवाल

MONEY

Money is a huge determinant of things in the human world. It quantifies success largely but what it really does is give a person a lot of confidence to move around. People who are financially very affluent are counted as real success. But the twist to the story is that how truly happy these people despite owning pots and pots of money. They say ultimately it is all about money. But it isn't. It is about how well you sleep in the nights, how much contentment and peace of mind you possess within you and how grateful you are to everything that you are blessed with.

Money is important because it goes without saying that it is an important pre requisite for survival. It is like actually saying the understood things of life like food and shelter. But the underlying factor is the fatalistic thinking that money is the elixir of life. One definitely needs to go beyond basic needs and save for a rainy day. It is an extremely pragmatic perspective and necessary too. One needs to respect money and protect it. But things start spiraling downwards when money starts gaining importance over other things. To covet money and not enjoy life, to not share it with the needy, to keep hankering for it and in continuum be obsessed with it is an unhealthy practice. Good health, a well -deserved break from normal routine, the company of good friends and the simple pleasures of life must not be replaced with this constant pursuit of money making.

Recently, a big business family from India had their son's pre marriage ceremonies celebrated with great ostentation. All the international news makers, film celebrities and the crème da la crème of the country and the world were there. It was money doing all the talking. But the cynosure was on the groom to be. It is obvious that he is not healthy and is suffering from a condition. His father, the richest man in this part of the continent cannot give his precious son good health with all his money. This is where the buck stops. We need to reflect on the nature of money that cannot buy the treasurable, intangible things in life. Most importantly, the thing is that it cannot be bought with money. Money insures life but it cannot guarantee its safety. Does money ensure a mindset? Perhaps. But it does not warranty a happy and a free soul. Given that argument, all the rich people in the world should have been happy. But there is a lot of sadness's inside those luxurious mansions. Money helps in shaping the dreams but to sustain the dreams and be happy with that sustainability requires a very balanced attitude. When greed replaces need- then the boundaries begin to blur. They become like the sea waves with no real control and real marking. Money making at the cost of health and time to oneself and the people to whom you matter is an insensitive gamble.

One must be comfortable enough to be able to make a healthy choice but if one is spoilt for choices – then it is time to make a call. There is another inspiring Indian family who pioneered the first multinational company in India. The family of Sudha Murthy and Narayan Murthy. They are rich but they are sensibly rich. Philanthropy is what they practice and lead such an exemplary simple and rich life that it goes on to prove that one can be rich and kind. One can have a lot of money and yet not be insane about it. The other example is that of the Tata group of companies and the person who leads it. Shri Ratan Tata comes from a legacy of industrialists who have been the greatest nation builders. Their money- and profit-making policies have always been centered on making the nation great. There is a lot to learn about the how the nature of money and the dynamics of it can be separated and magnificent things can be achieved if one treats money properly and in a righteous way.

Otherwise, we more or less belong to the category of some people who are so poor that they only have money.

- **Dr. Avhinav Shetty Jaiswal**

भेद में अभेद, सबका ईश्वर एक

भेद में अभेद और सबका ईश्वर एक की गुत्थी को अगर सुलझाना है तो हमें उपनिषद्दर्शन को समझना होगा। उपनिषद् में एक आत्मा की ही बात कही गई है । यह आत्मा ही पराप्रकृति है, परम पुरुष है । ईश्वर के जितने भी रूप और आकार हैं सभी इसी आत्मा के रूप और प्रतिरूप हैं । उपनिषद् में लिखा है –

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च ।। 9 ।। कठोपनिषद् अध्याय 2 वल्ली 2

अर्थात् जिस प्रकार समस्त ब्रह्माण्ड में प्रविष्ट एक ही अग्नि नाना रूपों में उनके समान रूपवाला सा हो रहा है वैसे ही समस्त प्राणियों की अन्तरात्मा में बैठे परब्रह्म एक होते हुए भी नाना रूपों में उन्हीं के जैसे रूपवाले हो रहे हैं और उनके बाहर भी हैं । जैसे – निर्माण की अग्नि प्राणाग्नि, भूख की अग्नि जठराग्नि, चिता की अग्नि चिताग्नि कहलाती है पर सभी जगह अग्नि अग्नि ही होती है ठीक उसी तरह ईश्वर का अंश आत्म ज्योति नारी में नारी, नर में नर, कीट-पतंगों में कीट-पतंगवत्, वृक्षादि में वृक्षवत्, पशु-पक्षियों में पशु-पक्षीवत् कहलाती है । लेकिन सब जगह वह आत्मा ही होती है । कैसे उसे इस कहानी से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है -

एक बार की बात है । भगवान कृष्ण ने अपने परम सखा मनसुख की परीक्षा लेनी चाही । वे भिन्न भिन्न रूप धारण कर उसके सामने प्रकट होने लगे । कभी वे भूत का रूप धारण कर उसे डराते तो कभी पिशाच का, कभी डरावने प्रेत का रूप धारण कर लेते । कभी हिंसक पशुओं का रूप धारण कर लेते । बाघ, चीता, शेर आदि । लेकिन मनसुख तो हर प्राणी में सिर्फ कन्हैया को ही देखते थे । इसलिए जब कृष्ण विभिन्न रूप धारण कर-करके उन्हें डराने में कामयाब नहीं हो सके तो मनसुख ने जोर से हँसकर कहा – "क्या सोचते थे कन्हैया! कि मैं डर जाऊँगा । अरे जहाँ मेरा सखा ही हर रूप में है वहाँ मुझे कैसा डर ? मैं तो अपने कन्हैया के जगत्पति रूप में डूब चुका हूँ । हर जगह तुम ही तुम हो । अब तो आ जाओ अपने असली रूप में' और कृष्ण भगवान अपने असली रूप में आ गए ।

यह कहानी हमें बताती है कि एक ही आत्मा समस्त रूपों में किस तरह से भासती है । आत्मा तो एक ज्योति है जो मनुष्य के हृदय गुफा में रहती है । दिखती इसलिए नहीं है क्योंकि उसपर हमारे ही जन्म- जन्मान्तर्गत संस्कारों के, वासनाओं के परत दर परत जमे रहते हैं । बस उनको भक्ति से, सत्कर्मों से हटाने की जरूरत है जिस हेतु सद्गुरु की शरणागति आवश्यक है फिर तो अपनी ही आत्मा का धवल प्रकाश दिखने लगेगा और एक ही आत्मा समस्त प्राणियों में कैसे भासती है तथा एक ही ईश्वर सभी में कैसे दिखता है इसका बोध हमें होने लगेगा ।

यह आत्मा ही है जिसके धवल प्रकाश के आगे सूरज, चाँद, सितारे, अग्नि, विद्युत सभी का प्रकाश फीका है । इसी आत्मा के प्रकाश से सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित होता है । जिस तरह प्रत्यक्ष सूर्य के प्रकाश से बहिर्जगत् के सभी ग्रह-नक्षत्र प्रकाशित होते हैं ठीक उसी तरह अन्तर्जगत् का सारा संसार इस आत्मा के प्रकाश से प्रकाशित होता है और केवल अन्तर्जगत् ही क्यों बहिर्जगत् का सूर्य प्रकाश भी इसी आत्मा के सूर्य प्रकाश से है । तभी क्रान्तदर्शी ऋषियों ने इस सत्य को अनुभूत कर कहा था -

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं, नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं, तस्यैव भासा सर्वमिदं विभाति ।।

पर यह ज्ञान भेद बुद्धि रखनेवालों के आगे प्रकट नहीं हो सकता । इसके लिए जिज्ञासा चाहिए और उस जिज्ञाता के शमन के लिए सच्चे मन से साधना, आराधना और उपासना भी करनी पड.ती है । बिना इस ज्ञान की भूख के शमन के संसार में न तो कोई मनुष्य शान्त हो सकता है न ही उस मनुष्य की शान्ति के बिना संसार में परम शान्ति व्याप्त हो सकती है ।वस्तुतः

वस्तुतः, मानव मन की परम शान्ति की दवा है उपनिषद् का यह अभेद दर्शन जो मानव - मानव के अन्दर के भेदभाव को समाप्त कर अभेद की दृष्टि उत्पन्न करेगा । हर मानव एक है, हर मानव की आत्मा एक है और हर मानव में स्थित परमात्मा एक हैं यह सद्ज्ञान मनुष्य-मनुष्य के बीज के नफरत-विद्वेष को समाप्त करने के लिए काफी है । मानव खिलेगा तो मानव बनकर, मानव हँसेगा तो मानव बनकर । भेद-अभेद की अमूल्य शिक्षा को प्राप्त कर ही कोई मानव "आत्मवत् सर्वभूतेषु' के महान औपनिषदिक भाव से युक्त हो सकता है और सारे

संसार में प्रेम और सिर्फ प्रेम का संदेश फैलाकर ईश्वरीय वातावरण उत्पन्न कर सकता है जिससे इस धरा पर स्वर्ग को उतारा जा सकता है ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- **जीवन में सफल होने के दो सूत्र हैं- आत्मविश्वास और ईश्वर विश्वास ।आत्मविश्वास है तो हम मेहनत करेंगे और सफलता प्राप्त करेंगे। ईश्वर विश्वास है तो हम उनकी कृपा का आवाहन कर लेंगे और जीवन में सफलता को प्राप्त करेंगे।**
- **मनुष्य जीवन में सुखी रहने के लिए या संतुलित रहने के लिए IQ और EQ दोनों की जरूरत है IQ मतलब इंटेलिजेंस कोसेंट(बुद्धि लब्धि) EQ मतलब इमोशनल कोसेंट (भावनात्मक लब्धि)बुद्धि और भावना का ठीक-ठीक योग विवेक पैदा करता है ,संतुलन पैदा करता है।**
- **सिर्फ दिमाग कुटिलता पैदा करती है और सिर्फ दिल भावुकता पैदा करती है। दिल और दिमाग का ठीक- ठीक योग विवेक पैदा करता है।**
- **जीवन के अंतिम संग्राम में विजय हृदय की होती है, मस्तिष्क की नहीं।**
- **हार्वर्ड विश्वविद्यालय के डेनियल गोलमेन कहते हैं- जीवन में सफल होने के लिए IQकी भूमिका मात्र 20% है और EQ की भूमिका 80% है मतलब बुद्धि से ज्यादा भावना महत्वपूर्ण है। बुद्धि होनी चाहिए पर भावना के साथ होनी चाहिए ,तभी संतुलन बैठ पाता है।**
- **हमारा जीवन प्रकृतिगत है और हमारी आत्मा परमात्मागत है हमारी चेतना का स्रोत तो परमात्मा है, लेकिन हमारे जीवन की गतिविधियों का स्रोत प्रकृति है।**
- **जीवन को सफल, समृद्ध बनाने के लिए IQ चाहिए और सफलता और आनंद के लिए EQ चाहिए।**
- **EQ वाले व्यक्ति के पास शुद्धतम प्रेम करने की क्षमता होती है।**
- **जीवन में जो चमत्कार होते हैं मिरेकल्स, डिवाइन इवेंट्स यह क्षमता तो EQ की है, IQ वाला व्यक्ति तपस्वी हो सकता है वरदान प्राप्त कर सकता है परंतु EQ वाला व्यक्ति खुद को भी बदल सकता है और दूसरे को भी बदल सकता है, सफलता और प्रसन्नता के साथ जी भी सकता है।**
- **श्री अरविंद कहते हैं- भाग्य और प्रारब्ध जिस तल पर आप जी रहे हैं उस तल की व्यवस्था है, पर चेतना के कई तल होते हैं ये भाग्य और प्रारब्ध अंतिम सत्य नहीं है। उच्च स्तरीय शक्ति, ईश्वर की करुणा ,आत्मा की सामर्थ्य भाग्य को बदल सकती है।**
- **वही पुत्र बड़भागी है जो माता-पिता के वचनों का अनुरागी है।**
- **माँ किसी के सम्मान की मोहताज नहीं है, माँ शब्द ही सम्मान से परिपूर्ण होता है।**
- **मातृ दिवस मनाने का उद्देश्य संतान के उत्थान में उनकी महिमा, उनकी महान भूमिका सिर्फ और सिर्फ महसूस करना है।**
- **माँ की सेवा से मिला आशीर्वाद सात जन्मों के पापों को नष्ट करता है।**
- **एक माँ आधे संस्कार तो बच्चे को अपने गर्भ में ही दे देती है, यही माँ शब्द की शक्ति को दर्शाता है।**
- **वह माँ ही होती है जो प्रसव की पीड़ा सहकार अपने शिशु को जन्म देती है ।दर्द झेलने के बाद भी जन्म देने के बाद माँ के चेहरे पर एक संतोषजनक मुस्कान होती है, इसलिए माँ को सनातन धर्म में भगवान से भी ऊंचा दर्जा दिया गया है।**
- **माँ शब्द से समस्त संसार का बोध होता है। जिसके उच्चारण मात्र से हर दुख- दर्द का अंत हो जाता है।**
- **माँ की ममता और उसके आंचल की महिमा को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है ,उसे सिर्फ और सिर्फ महसूस किया जा सकता है ।**

- EQ और IQ का ठीक- ठीक योग यानी हृदय से सच्ची पुकार परमात्मा का स्पर्श करा सकता है ।सच कहें तो शुद्ध हृदय जीवन की विभूति है। क्योंकि शुद्ध हृदय आपकी आत्मा का भी स्पर्श करती है, शुद्ध हृदय उच्चतर शक्ति का आह्वान कर सकता है, शुद्ध हृदय ईश्वर की कृपा का भी आह्वान कर सकता है।
- किसी व्यक्ति में ऐसा क्या होता है कि हर कोई उसकी एक ही आवाज पर उसका कोई भी काम करने के लिए तैयार रहता है?ना उससे कोई सवाल पूछता है ना उसे कोई मना करता है ,कारण क्या हो सकता है? इसका एक ही उत्तर है -दूसरों के साथ चलने की योग्यता।
- सामान्य तौर पर जीवन में अधिकांश खुशी दूसरों के साथ सुखद संबंधों से मिलती हैं और ज्यादातर समस्याएं दूसरों के साथ दुखद संबंधों से मिलती है।
- सार्वजनिक जीवन की कोई भी सफलता पारिवारिक जीवन की असफलता की भरपाई नहीं कर सकती।
- हमारे भीतर के विचार, सबके प्रति सुंदर ,प्रेमपूर्ण और सकारात्मक हैं ,तो बाहरी जगत भी नतमस्तक रहता है।
- संसार में ऐसा परमेश्वर भी नहीं है जब वह धरती पर आए ,कलेवर धारण करे, काया धारण करें और अपने बल पर जीवन चला ले। उसे भी माँ की गोद, पिता की छाया, मित्रों का संबल, परिजनों और रिश्तों का साथ चाहिए होता है।
- आज हम संपन्नता और समृद्धि के अतिरेक में क्या-क्या खोते हैं ?परिवार खो देते हैं।
- परिवार अब बचा नहीं है ,जो बचे हैं खंडहर बचे हैं, जहां भूत रहने लगे हैं, प्रेत रहने लगे हैं ।आज परिवार खत्म होते जा रहे हैं ,काउंसलर- साइकोलॉजिस्ट बढ़ते जा रहे हैं। इंसान अपना दुख ,अपनी पीड़ा, अपना रोना, अपनी परेशानी पैसे देकर बता रहा है। यह भी अब एक व्यापार हो गया है।
- आज हम विकसित तो हुए, सुविधाएं तो बढ़ी, पर रिश्ते खो गए, प्रेम खो गया ,परिवार खो गया ,माँ खो गई। विकास की अंधी दौड़ में अंदर का आकाश खो गया।
- हमें बचपन बहुत सुहाना लगता है परंतु ठहरता नहीं है, हमें माता-पिता ,गुरु या अपने परिजनों का प्यार अच्छा लगता है, पर ठहरता नहीं है, रिश्ते हमें अच्छे लगते हैं पर ठहरते नहीं हैं।फिर क्या करना चाहिए? समाधान क्या है? समाधान यह है- हमारी यादें ,हमारी खूबसूरत बातें और हमारे बीच की जो भावनाएं है वह बरकरार रहनी चाहिए।
- जो नदियां होती है ये पहाड़ों की बेटियां होती है। नदी कहीं भी रहे पहाड़ से उसका संपर्क कभी नहीं टूटेगा ,गंगोत्री से गंगा नदी गंगासागर तक जाती है,बिहार भी जाती है ,बंगाल भी जाती है लेकिन गंगोत्री से नाता टूट जाता है क्या ?ऐसा कोई क्षण होता है कि गंगा नदी के जल प्रवाह में गंगोत्री की कुछ बूंदे ना घुसी हों ?वह तो स्रोत है, वह हमेशा प्रदान करती रहेगी।
- जैसे बेटी जाती है तो मां-बाप क्या करते हैं? मां-बाप उसे अचार भी देते हैं ,खटाई भी देते हैं ,अनाज भी देते हैं यानी खाने का सामान भी देते हैं और पैसा भी भरपूर देते हैं ।ऐसा नहीं है कि बेटी ने मांगा है, हमारी बेटी खुशहाल और संपन्न रहे इसलिए देते हैं।
- वह पहाड़ सौभाग्यशाली है जो नदी को भरपूर जल राशि दे करके उसे गंतव्य की ओर विदा कर देता है।वियोग में पहाड़ को पत्थर बने रहने की जरूरत नहीं है, उसे लगातार जल राशि देने की जरूरत है।
- अपने सामने अपनों को जाते देखना बहुत कष्टपूर्ण तो है परंतु नियति को रोका नहीं जा सकता, नियति घटित होकर रहती है।
- जीवन में बहुत चीज सीखने की जरूरत नहीं है, केवल इमानदारी और प्रेम सीख जाएं, सब हो जायेगा।

जिज्ञासा

प्रश्न: - शासन धर्मनिरपेक्ष हो यह जरूरी है पर वह अधार्मिक नहीं हो सकता ।आप क्या सोचते हैं?

उत्तर: - धार्मिक और अधार्मिक का अर्थ क्या है? इस सृष्टि में धर्म के दो रूप हैं- एक अर्थ है कर्तव्य, कर्तव्य निष्ठ होना भी धर्मनिष्ठ होना है। दूसरा अर्थ है सामान्य भाषा में पूजा ,पत्री,पंथ ,मजहब लगते हैं। तो पूजा, पत्री ,पंथ मजहब से शासन का कोई लेना-देना नहीं है। शासन का अर्थ है सुव्यवस्था,हर चीज की सुव्यवस्था। सुख- सुविधाओं का संचार , सुव्यवस्थित नागरिक जीवन यही शासन का कर्तव्य है ।हर व्यक्ति का, वह किसी भी पंथ को मानने वाला हो सकता है, वह हिंदू हो सकता है, मुसलमान हो सकता है,ईसाई हो सकता है ,कोई भी हो सकता है ।व्यवस्था में सभी चीजें आती हैं -शिक्षा, चिकित्सा ,बिजली, पानी, सड़क आदि सारी चीजें आती है। सर्वधर्म समभाव, यह उसका कर्तव्य नहीं है। शासन को विचार, धारणा,पंथ से निरपेक्ष इसलिए रहना चाहिए कि उसे हर चीज के लिए जो उस देश का निवासी है उसकी सुख-सुविधा और उसकी सुव्यवस्था करना ,शासन का कर्तव्य है। धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं।

प्रश्न: - क्या इन्द्र देव और वरुण देव एक ही देवता है, जो जल बरसाते हैं?

उत्तर: - नहीं, जल के दो स्वरूप हैं, एक जल जो मेघों में होता है, जो अपने साथ पर्जन्य की वर्षा करता हैं, उस के देवता इन्द्र हैं । इन्द्र जल के देवता नहीं है, मेघों के देवता हैं। जल और मेघ में फर्क है, जल यानी जलराशि, मेघ यानी जल बृष्टि, मेघ में जलराशि नहीं होती, मेघ कोई तालाब नहीं है, मेघ में जल वाष्पीभूत होता है, मतलब मेघ जल नहीं होता है, भाप होता है। जो इकट्ठी जलराशि है, तालाब, नदियां, समुद्र, कुएँ, उसके देवता वरूणदेव हैं । मेघ के देवता इंद्र हैं और जलराशि के देवता वरुण हैं। रामायण काल में कहा जाता था, वायु को, बहो, तो वायुदेव वायु को शमन कर भेजते थे, अग्निदेव अग्नि का शमन कर के भेजते थे, वर्षा को कहा जाता था बरसो, तो इंद्र देव मेघ को बरसाते थे, न की वरुण देव वर्षा भेजते थे। वरुण देव का आह्वान जल राशि में होता है, वर्षा में नहीं, वर्षा, वरुण का कार्य नहीं है। जलराशि मतलब इकट्ठा हुआ जल।

प्रश्न: - समस्या वही रहती है, फिर समाधान अलग-अलग क्यों?

उत्तर: - कान के दर्द और आंख के दर्द में फर्क है ना, उसकी अलग अलग दवा होगी। हर समस्या का अपना स्वरूप होता है, अपनी संरचना होती है, जो भिन्न भिन्न होती है। पर्यावरण की समस्या अलग है, चिकित्सा की समस्या अलग है। हाँ, कोरोना आया पूरी दुनिया में आया, पर उसकी गंभीरता हर एक देशों में अलग अलग थी। हर व्यक्ति में उसकी इंटेनसिटी अलग-अलग थी। तो समझने कि बात है कि दुनिया की समस्या एक जैसी नहीं होती, कोरोना भी हर देश, उसकी परिस्थिति के अनुसार, अलग-अलग था। अस्पताल में 10 पेशेंट कोरोना के आए, एक आध कॉमन दवा होगी, हर एक को एक ही दवा नहीं दी गई। प्रत्येक समस्या अपने स्वरूप और संरचना में भिन्न-भिन्न होती है। कुछ समस्या एक जैसी हो सकती है, पर ये सर्वमान्य नियम नहीं हो सकता।

प्रश्न: - यहाँ संस्कृति का क्लास होगा क्या? संस्कृति हमारे लिए और संस्कृति के लिए जरुरी है।

कुबेर और लक्ष्मी में क्या अंतर है?

उत्तर: - कृति जब सुकृति बनती है तो संस्कृति कहलाती है और कृति जब कुकृति बनती है तब विकृति कहलाती है। जहाँ तक कुबेर और लक्ष्मी में अंतर का प्रश्न है, कुबेर कोषाध्यक्ष है। वित्त मंत्री हैं देवों के। देवो के कोष के संरक्षक हैं। लक्ष्मी धन की अधिष्ठात्री देवी है। लक्ष्मी धन को उत्पन्न करती है। धन की प्रसूति करती है। वो धन की स्रोत है। कुआं और तालाब में क्या अंतर है? कुआं स्रोत होता है वहाँ जल उफनता रहता है, इसलिए कुआं खाली नहीं होता पर तालाब खाली हो जाता है। तो कुबेर का कोष रिक्त हो सकता है, पर लक्ष्मी कभी रिक्त नहीं हो सकती। तो लक्ष्मी धन की स्रोत है और कुबेर धन के संरक्षक हैं। लक्ष्मी माता धन की उदगम हैं और कुबेर धन के मंत्री हैं । प्रकृति में तीन शक्तियां हैं, महाकाली, महालक्ष्मी, महा सरस्वती। महा काली शक्ति की उद्गम है, महालक्ष्मी समृद्धि की उद्गम हैं, महा सरस्वती ज्ञान की उद्गम हैं। जो हमने कहा तालाब में पानी संरक्षित है पर वहाँ पानी घट भी सकता है, खत्म भी हो सकता है, लूटा भी जा सकता है, पंपिंग सेट लगा के पानी को खींच लो। उसी तरह कुबेर के कोष को उनका सौतेला भाई रावण ने लूट लिया, सारा धन ले गया, पुष्पक विमान भी ले गया, लेकिन लक्ष्मी कुएं की तरह है, कुएं पर आप चारदीवारी बना सकते हैं, लेकिन कुएं में जो पानी उफन रहा है, उसे आप रोक नहीं सकते, वो उफनता रहेगा। तो प्रकृति में लक्ष्मी माता समृद्धि की अजस्र प्रवाहिनी धारा है, जो बहती रहती है, लक्ष्मी मतलब धन की गंगा-जमुना।

प्रश्न: - गुरु बडा या भगवान?

उत्तर: - गुरु तो बहुत बड़ा होता है, अगर सचमुच में गुरु मिल जाये तो, अगर ठग मिल जाए तो तो फिर कुछ कह नहीं सकते। गुरु वो होता है जो आपके जन्म-जन्मान्तर का हाल जानता है,दुख-तकलीफों से आप को मुक्त कर सकता है, जो आपके अज्ञान को दूर कर सकता है, भटके हुए को राह दिखाता है, पर अल्टीमेट तो भगवान तक ही पहुँचना है। बड़ा या छोटा नहीं है, गुरु व्यक्ति के रूप में भगवान ही है, गुरु वह झरोखा है जिससे हम भगवान को देख सकते हैं, जैसे खिड़की है, उसे खोला तो आसमान दिखता है अब ये बताएँ कि खिड़की बड़ी है या आसमान? कौन बड़ा है? पर खिड़की न हो तो क्या हम आसमान देख सकते हैं, हम तो बंद है कमरे में, आसमान समझ में आएगा क्या? इसलिए बड़ा छोटा की व्याख्या नहीं कर सकते। हाँ, ये व्याख्या कर सकते हैं उस गुरु, उस झरोखे के माध्यम से हम अनंत को देख सकते हैं।

प्रश्न:- बड़ा भगवान कौन है और कैसा है?

उत्तर: - भगवान बड़ा या छोटा नहीं होता है। जैसे एक कलेक्टर है, एक एसपी है, एक प्रोफेसर है, एक बालक है, अब कहें कि बड़प्पन का पैमाना क्या है? शक्ति है पैमाना? तो कलेक्टर के पास, एसपी के पास शक्ति ज्यादा है, उससे बड़ी शक्ति प्रधानमंत्री के पास है। अगर पैमाना ज्ञान है तो जो विद्वान है, जो विचारशील है वह बड़ा। बड़ा छोटा का कोई एक पैमाना तो है नहीं तो फिर क्या कहा जा सकता है। तो भगवान तो एक ही है, अब एक भगवान

बड़ा है या छोटा है? अब एक है तो कॉम्पिटिशन तो है नहीं। "एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति"- एक ही सत्य को जानकार लोग, विद्वान लोग, पंडित लोग कई तरीके से कहते हैं। कोई ब्रह्मा कहता है, कोई विष्णु कहता है, कोई शिव कहता है, कोई दुर्गा कहता है, कोई गायत्री कहता है। भगवान तो एक ही है, जब दो होगा तो कॉम्पिटिशन होगा।

प्रश्नः- मेरा इष्ट और कुलगुरु कौन है?

उत्तरः - ये तो आप अपने कुल पुरोहित से पूछें, किसी ज्योतिषी से पूछें जो आपकी कुण्डली के नवम भाव को देख करके बताएं कि आप शक्ति प्रधान हैं या ज्ञानप्रधान हैं या कौन प्रधान हैं। वैसे इष्ट क्या होता है हम ये बता सकते हैं। इष्ट वो होता है जो अनिष्ट नहीं करता, अनिष्ट नहीं होने देता। जो आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचा देता है,इष्ट तक पहुंचा देता है। जिसके संरक्षण और सान्निध्य में, जिसके शरण में रहने से, आपका अनिष्ट नहीं होता है। कुलगुरु जो आपको और आपके सभी वंशजो को मार्ग दिखाता है।

प्रश्नः- कितना भी पढ़ लें कुछ याद नहीं रहता है।

उत्तरः - मन लगा के पढ़िए। लर्निंग अलग है, अन्डरस्टैन्डिंग अलग है, मेमोरी अलग है, ये हमारे दिमाग का प्रोसेस है। परेशानी ये नहीं कि हमें याद नहीं रहता, परेशानी यह है कि हमें कब याद रहता है और कब याद नहीं रहता है। जिसमें हमारी रूचि होती है, हमें मन लगता है, वो याद रहता है। जिसमे हमारा मन उचटा रहता है, वहाँ याद नहीं रहता है। जिससे मन जुड़ जाए वो याद रहता है, जिससे मन की डोर कमजोर रहती है वो याद नहीं रहता है। अगर विषय वस्तु से मन नहीं जुड़ रहा है तो क्यों नहीं जुड़ रहा है? पता करिए। कुछ शिक्षक होते हैं बड़े-बड़े और कठिन प्रश्नों को भी खेल-खेल में समझा देते हैं तो वो हमेशा याद रहता है। लेकिन जब विषयवस्तु आप को बोझ लगने लगता है तो फिर याद नहीं रहता। जो चीज़ को आप अपना महसूस नहीं करते, अपना नहीं बना पाते हैं, हालांकि उससे आपकी जिंदगी जुड़ी हुई है, ह्यूमन लाइफ का एक्सपेंशन लगेगा, तो वो सब्जेक्ट आपको मजेदार लगेगा। एक फिजिक्स के प्रोफेसर थे आप सर्कुलर को कहो बर्तुलाकार, तो कठिन लगेगा । 3 दिन सोचते रहो कि बर्तुलाकार क्या होता है। वो प्रोफेसर कहते थे आलू जैसा गोल-गोल, तो देखो कितनी जल्दी समझ में आता है, याद भी नहीं करना पड़ता, रटना भी नहीं पड़ता, तो विषय को रुचिकर बनाइये, इतना इंट्रेस्टिंग हो जाता है कि वो आप में खुद ब खुद समा जाता है। जब आप के स्मरण में आ जाता है, पच जाता है, और फिर उसको जब आप लिखते हो, तो आपका ओरिजनैलिटी का संपुट होता है और मजेदार बन कर निकलता है। तो मूल बात है रुचि जग जाएगी तो स्मरण भी रहेगा। रुचिकर हो जाएगा, स्वादिष्ट हो जाएगा तो फिर कहीं दिक्कत नहीं है।

प्रश्नः- क्या नास्तिक ही सबसे बड़ा आस्तिक होता है?

उत्तरः - अगर उसे सत्य का बोध हो जाये तो वो आस्तिक हो जाएगा, वैसे सच पूछें तो कोई नास्तिक होता नहीं क्योंकि नास्तिक का मतलब है न से और आस्तिक का मतलब है अस्तित्व से। अब आप ये बताइए कि आप हैं या नहीं हैं, अगर आप हैं, आपका अस्तित्व है तो फिर आप नास्तिक कब से हो गए? आप अस्तित्व को किसी न किसी

रूप में स्वीकार करते हैं तो आप आस्तिक हैं। जो परमेश्वर जल, जंगल, जमीन, आसमान, नदी, तालाब, पहाड़, सृष्टि के कण-कण में छाया हुआ है, अब अगर आप सृष्टि के एक कण को भी महसूस करते हैं तो उसी को महसूस करते हैं, इन अर्थों में नास्तिक कोई नहीं है। हाँ! मंदिर नहीं जाना, मस्जिद नहीं जाना, ईश्वर-अल्लाह को नहीं मानना, ईसा को मानना, मूसा को नहीं मानना, ये सब चलता रहता है, ये धार्मिक विवाद, वितंडावाद चलता रहता है, इसका कोई मूल्य नहीं है। जीवन अनेक तलों का सत्य है, एक तल मिडिल स्कूल का था, वो एक समय सत्य था, एक तल हाई स्कूल का था, फिर कॉलेज का सत्य है, फिर आई एस बन गए, तो उसका सत्य है, डॉक्टर बन गए तो उसका सत्य है। तो कहने का मतलब है कि आयाम बदलते रहते हैं चेतना के, इसलिए अनेक तरह का सत्य है। नास्तिकता आस्तिकता है नहीं कहीं, रोटी खाते हैं न, हाँ, खाते हैं तो फिर है, कुछ है तो फिर आस्तिक हैं।

प्रश्न:- सनातन और हिंदू में क्या अंतर हैं?

उत्तर: - सच कहें तो हिंदू शब्द, हमारा है नहीं ये इम्पोर्टेड है, अरब में स शब्द नहीं होता है, सिंधु को हिंदू कहते थे, सिंधु के पार रहने वाले हिंदू, ये हिंदू लोग हैं हिंदुस्तान में रहते हैं। जिससे कहते हैं सरयू पाड़ी ब्राह्मण, सरयू पार रहते है वो। हिंदू शब्द अरबी से आया, हमारा देशी शब्द आर्य है। आर्य का मतलब होता है श्रेष्ठ, सुसंस्कृत, सुसभ्य, जिसको हम अनार्य कहते हैं, उसका मतलब होता था असंस्कृत, असभ्य, अशिक्षित, अनार्य का मतलब कोई जाति नहीं। सनातन का मतलब है शाश्वत, चिरंतन, जो चिर पुरातन और चिर नवीन दोनों जिसमें समाहित है वो है सनातन, चिर नवीन होकर भी चिर पुरातन है, वो है सनातन, मतलब जिसका न आदि है ना जिसका अंत है, ना ओर है ना छोर है। इसलिए जो धर्म है वो सनातन है। हम लोगों ने कहा बौद्ध धर्म, बुद्ध ने कहा हमने जो अनुभव किया, एष धम्म सननतनो, ये सनातन धर्म है, इसे लोगों ने आदिकाल से अनुभव किया, किसी ऋषि ने नहीं कहा कि सिर्फ मैंने अनुभव किया। उन्होंने कहा, वो जो अनुभव था, वो मैंने भी अनुभव किया है। यही तो सनातन है। अब राजनीति कुछ भी कहे हिंदू कहें सनातन कहें। सामान्य व्यक्ति के लिए जो धर्म है वो सनातन ही है। कुछ लोगों ने कह दिया जो हिंदू हैं वो ये सब करते हैं, तो ये दूसरे का परिचय है। अब कोई कह दे अरुण जायसवाल सहरसा में रहते हैं और जो पटना में रहते हैं वो? वो कौन अरुण जायसवाल है? शब्द तो सनातन ही है, हिंदू हो मुस्लमान हो, है तो सभी सनातन ही ना, वो भी सनातन अनुभव करते हैं और ये भी सनातन अनुभव करते हैं।

प्रश्न:- इंसान का अंतिम कर्तव्य और पहला कर्तव्य क्या होता है?

उत्तर: - पहला कर्तव्य होता है- अपने जीवन को समझो, अपने जीवन को नरक में न डालो यानी अपनी आत्मा का उद्धार करो, भगवान कृष्ण गीता में ये बात कहते हैं। अगर अपने जीवन में सन्मार्ग पर हो, सत्कर्म के साथ हो, तो अपना भी कल्याण करोगे और लोगों का भी कल्याण करोगे। परिवार का भी, घर का भी, समाज का भी। अप्प दीपो भव, अपना दीपक आप बनो। यही इंसान का पहला और अंतिम कर्तव्य है।

मई माह की गतिविधियाँ

कर्मकांड प्रशिक्षण की कक्षा में प्रशिक्षण लेते युवा मंडल एवं युवती मंडल।

प्रतिदिन रेलवे स्टेशन प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर 1:00 बजे से 2:00 बजे के बीच गायत्री परिवार, सहरसा के द्वारा जरूरतमंदों के बीच भोजन प्रसाद का वितरण

दिनांक 12 मार्च 2024 (रविवार) को सुपौल जिला के दौलतपुर प्रखंड में प्रमंडलीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। दीप प्रज्वलन के साथ गोष्ठी की शुरुआत हुई।परिजनों को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल जी ने कहा हम लोग प्रत्येक तीन महीने में गायत्री परिवार द्वारा किए जाने वाले कार्यों की समीक्षा बैठक करते हैं एवम आगे की कार्य योजना बनाते हैं।गुरुदेव का संकल्प है धरती पर स्वर्ग का अवतरण। हम सभी को गुरुदेव के विचारों को अधिक से अधिक घरों तक पहुंचाना है । जिला के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने जिले में विगत महीनों में किए गए कार्यों का प्रतिवेदन समर्पित किया। इस बैठक में 23 मई को होने वाले गृहे- गृहे गायत्री यज्ञ,अखंड ज्योति कलश यात्रा इन विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई...शांतिपाठ के साथ बैठक का समापन हुआ।

खगड़िया में शक्तिपीठ स्थापना दिवस समारोह के दौरान आयोजित युवा उत्कर्ष कार्यक्रम को संबोधित करते डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल

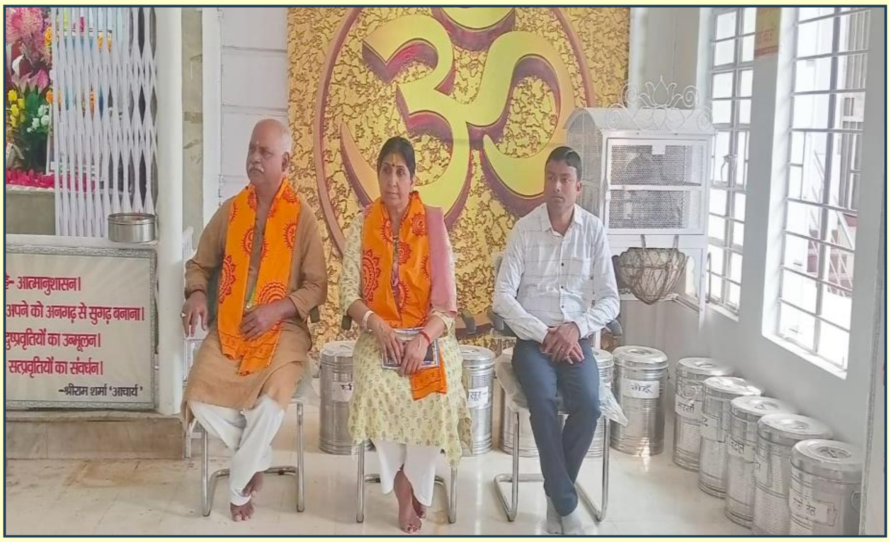

दिनांक 05--05--24 को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-प्रातः काल स्वर्णिम काल होता है।परीक्षा में सफल कैसे हों,जीवन में सफल कैसे हों ? इस संबंध में उन्होंने कहा, सफलता के दो सूत्र होते हैं- आत्मविश्वास और ईश्वरविश्वास। अगर हम इन दोनों सूत्र में से किसी एक सूत्र पर विश्वास करते हैं तो हमारे जीवन शैली के लिए खतरा बन सकता है।अगर सिर्फ आत्मविश्वास है तो इससे अहंकार पैदा हो सकता है। जिससे जीवन का संतुलन बिगड़ जाता है और अगर हम ईश्वरविश्वास पर ही टिके रहें तो इससे आलस-प्रमाद जन्म लेता है, जिससे हमारा जीवन ना तो संतुलित रह पाता है और नहीं सुचारु रूप से चल पाता है। अगर हम दोनों सूत्र अपनाते हैं तो फिर हम सफल तो होते ही हैं,साथ ही कभी जीवन में अवसाद नहीं होता है। उन्होंने कहा- यदि परमात्मा के प्रति समर्पण, शरणागत का भाव है तो जीवन में आनेवाले दुःख, दर्द,पीड़ा भी हमें ज्यादा प्रभावित नहीं कर पाते। उन्होंने कहा -मनुष्य जीवन में सुखी रहने से ज्यादा महत्वपूर्ण है अपने को संतुलित रखना। और संतुलित रखने के लिए IQ और EQ का होना बहुत जरुरी है। बुद्धि और भावना का ठीक -ठाक योग से CQ पैदा होता है।आस्था, विश्वास, प्रेम ये सब EQ से ही आते हैं। IQ , EQ , CQ के बाद आता है SQ, SQ ह्रदय का सबसे शुद्ध प्रेम रुप है। SQ से सिर्फ ह्रदय परिवर्तन नहीं बल्कि रुपांतरण होता है।उन्होंने धर्म का विश्लेषण करते हुए कहा-धर्म निरपेक्षता-राज्य शासन से होता है न कि समाज से।धर्मनिरपेक्ष समाज नही बल्कि शासन हो सकता है।हिन्दू-मुस्लिम होना मनुष्य की निजता है।इसे धर्म से नहीं आंकना चाहिए।मनुष्य को सिर्फ अपना कर्तव्य देखना चाहिए। धर्म एक जीवन शैली है।इस सत्र में डी आई जी CISF पटना श्री एम के सिंह सपत्नी, दन्त चिकित्सक अभिषेक राजा उपस्थित थे।

दिनांक 12--5--24 को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-आज मातृ दिवस है।मातृ दिवस की विशेषता बताते हुए कहा-वही पुत्र बड़भागी है जो माता-पिता के वचनों का अनुरागी है।माता-पिता के बचनों का पालन करके उन्हें संतुष्ट करने वाला पुत्र संसार में दुर्लभ है।मां शब्द अपने आप में संपूर्ण है।मातृ दिवस मनाने का उद्देश्य संतान के उत्थान में उनकी महिमा और उनकी महान भूमिका और उसे सिर्फ और सिर्फ महसूस करना है और उस एहसास के साथ जीने मात्र से जीवन परिपूर्ण हो जाता है, मां ही बच्चे की पहली गुरू होती है।परम पुज्य गुरुदेव के अनुसार माता ही अगर हो अज्ञान तो पुत्र कैसै बने महान। माता ही निर्माता होती है, मां आधे संस्कार तो अपने बच्चे को गर्भ में ही दे देती है।उन्होंने कहा गीता के अनुसार मां की सेवा से मिला आशीर्वाद सात जन्मों के पापों को नष्ट कर देता है।एक मां ही प्रसव की पीड़ा को सहन कर बच्चों को जन्म देती है। इस पीड़ा को सहन कर मां के चेहरे पर संतोषजनक मुस्कान होती है। सनातन धर्म में मां का स्थान भगवान से भी ऊपर दिया गया है।उन्होंने कहा आजकल की सबसे बड़ी बिडम्बना है मां तो दिखती है पर मातृत्व नही दिखता है।आज के समय में मातृत्व को जगाना सबसे बड़ी जरुरत ही नहीं अनिवार्य है। इस सृष्टि की मूल पहचान मां ही होती है।उन्होंने कहा-आज कल की संतान अपने मां-बाप को बोझ समझकर वृद्ध आश्रम में छोड़ आते हैं। उन्हें आज के दिन अपने गलतियों पर पछतावा करते हुए, अपनी भूल का एहसास करते हुए अपने-अपने मां बाप को वापस अपने घर लाने के लिए कदम उठाना चाहिए। इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ,एवं विभिन्न संस्कार हुए, जिसमें अन्नप्राशन तथा विवाह दिवस संस्कार हुए।

दिनांक 19--5--24 को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डॉक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा- इस संसार में एक होती है प्रकृति और एक होती है नियति, एक होती है गति और एक होता है गंतव्य । प्रकृति यानी हमारा स्वभाव हमारा नेचर। हमें बचपन बहुत सुहाना लगता है, हमें माता-पिता, गुरुजनों का प्यार बहुत अच्छा लगता है, हमें रिश्ते बहुत अच्छे लगते हैं। किंतु यह ठहरते नहीं है। कोई भी मां अपने बच्चों को कितना भी प्यार कर ले, किंतु कोख में ठहरा नहीं सकती। जब यह सब हमारे जीवन में ठहर नहीं सकते तो समाधान क्या है? समाधान है हमारी यादें, हमारी बातें और हमारे बीच की भावनाएं बरकरार रहनी चाहिए। अतीत तो ठहरा हुआ है लेकिन वर्तमान को ठहरा नहीं सकते। वर्तमान को खूबसूरत बनाकर उसे यादगार बना सकते हैं। हमारा बचपन कहीं भाग नहीं गया है। जो था, वह है ।लेकिन हम वर्तमान को ठहरा नहीं पाएंगे वर्तमान जब अतीत बनेगा तो उसमें खूबसूरत पल डाल सकते हैं। हमारे मन में यह सदैव रहना चाहिए कि कोई भी चीज हमेशा रहने या ठहरने वाला नहीं है इसलिए हम जहां हैं वहां हमेशा हमें अच्छा करना चाहिए और हड़पने या हथियाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। ऐसे में यदि कुछ छूटता है तो संतुष्टि भाव से छूटता है। नियति हमेशा आगे बढ़ती है नदी की नियति है पहाड़ को छोड़ना, पहाड़ को तोड़ना पर पहाड़ को पत्थर बनने की जरूरत नहीं है। नदी कहीं भी रहे किंतु पहाड़ से नाता नहीं टूटता। अपने सामने अपनों को जाते देखना बहुत कष्टकारी होता है, किंतु नियति को रोका नहीं जा सकता ।नियति घटित होकर रहती है। उन्होंने इसी क्रम में आगे कहा जीवन में बहुत कुछ सीखने की जरूरत नहीं है केवल प्रेम और ईमानदारी सीख जाएँ, सब हो जाएगा। प्रेम और ईमानदारी के अलावा दुनिया में कुछ भी सीखने की जरूरत नहीं है। यह मातृ दिवस, यह परिवार दिवस इन्हीं सब चीजों को जीवन में उतारने के लिए मनाया जाता है। इसी क्रम में उन्होंने आगे कहा आज परिवार व्यवस्था के समाप्त होने के लक्षण हैं पहला लिव इन रिलेशनशिप। कमिटमेंट से बचने का तरीका है। दूसरा समलैंगिक विवाह।जब रिश्तों और जीवन मूल्य पर विश्वास नहीं है, जब शिक्षा और संस्कार पर विश्वास नहीं है तब परिवार कहां आकर ले पाएगा? अगर हमारे दिलों में थोड़ी बहुत कीमत बची हुई है रिश्तो की, जीवन मूल्यों की, तभी हम परिवार व्यवस्था में विश्वास कर पाएंगे और तीसरा सबसे बड़ा कारण है स्वार्थ और अहंकार। स्वार्थ और अहंकार। ने परिवार व्यवस्था को तोड़फोड़ डाला, नष्ट-भ्रष्ट कर डाला । उन्होंने इस क्रम को जारी रखते हुए कहा स्वार्थ और अहंकार प्रदूषण है जीवन का। जीवन में जब स्वार्थ और अहंकार होता है तब हम हर चीज को अपने नजरिए से देखने लग जाते हैं। ''मैं और मेरा' - परिवार को ही नहीं व्यक्तित्व को भी नष्ट कर देता है। परम पूज्य गुरुदेव ने भी कहा है प्यार और सहकार से भरा-पूरा परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है। परिवार व्यवस्था का अर्थ है कि विश्वास और प्यार की प्रगाढ़ता । आज परिवार खत्म होते जा रहे हैं, काउंसलर और साइकोलॉजिस्ट बढ़ते जा रहे हैं। सच तो यह है कि हम विकसित तो हुए हैं किंतु इसमें प्रेम खो गया, विश्वास खो गया, परिवार खो गया है, विकास के इस अंधी दौड़ में अंदर का आकाश खो गया। हम सब को जरूरत है इन सब चीजों में सुधार लाने की तभी परिवार व्यवस्था सुचारू रूप से चल पाएगा अन्यथा हम फिसलते चले जाएंगे।इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ,एवं विभिन्न संस्कार हुए। साथ ही विशिष्ट अतिथिगण के रूप में तारणी पांडेय ((असिस्टेंट प्रो0) डिपार्टमेंट आफ इंग्लिश, जानकी देवी मैमोरियल कॉलेज, दिल्ली) और उनके भाई तुष्मय पांडेय मौजूद रहे। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के आध्यात्मिक प्रयोग पूरे देश में एक दिन एक साथ 23 मई 2024 को गुरुवार प्रातः 8 बजे से 12 बजे दोपहर तक एक कुंडीय नये घरों में हुई।

समर्थ एवम् शक्तिशाली राष्ट्र हेतु गृहे- गृहे गायत्री यज्ञ उपासना के लिए शक्ति पीठ, सहरसा से प्रस्थान करते आचार्य एवम् आचार्या गण

घर घर में यज्ञ रचाएँ - आओ राष्ट्र सबल बनाएँ!

दिनांक 23/05/2024....गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ, प्रभात फेरी की झांकी.....

यज्ञ कराते गायत्री परिजन

प्रत्येक महीने के अंतिम रविवार की तरह दिनांक 26/05/2024 (रविवार) को सहरसा जिला के सौर बाजार प्रखंड के अंतर्गत कबीलासी गांव में 24 अलग- अलग नए घरों में देव स्थापना एवं एक कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया। साथ ही, पर्यावरण संतुलन हेतु प्रत्येक घरों में पौधा वितरण किया गया।गुरुदेव के विचारों को अखण्ड ज्योति पत्रिका एवं दीवार लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया।जिसमें गायत्री परिवार सहरसा के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने अहम भूमिका निभाई।

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

यज्ञ में मंत्रोच्चार के बीच सुख- शांति की कामना

संवाद सूत्र, जागरण ● सहरसा: गुरुवार को शहर के विभिन्न जगहों पर गृहे-गृहे गायत्री हवन यज्ञ किया गया। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार गायत्री शक्तिपीठ के आहवान पर बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर ही शहर के 108 घरों में गायत्री हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। मंत्रोच्चार से आहूतियों के जरिए सुख-शांति और संतुष्टि की कामना की गयी। हवन यज्ञ अखिल भारतीय गायत्री शक्तिपीठ शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में शक्तिपीठ के [पुरोहि]तजनों द्वारा संपन्न कराया गया। यह आध्यात्मिक प्रयोग पूरे देश एवं विदेश में एक साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि इस यज्ञ की उर्जा से वातावरण का संशोधन होगा। इस अभियान का लक्ष्य व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में एकता, समता, ममता और शुचिता का वातावरण निर्मित करना है। कार्यक्रम के लिए गायत्री शक्तिपीठ में पिछले 15 दिनों से दर्जनों पुरोहितों का विशेष प्रशिक्षण दिया गया था। प्रशिक्षित पुरोहितों ने1 हवन यज्ञ करवाया।

स्वार्थ व अहंकार ने परिवार व्यवस्था को तोड़ डाला : डॉ अरुण

प्रतिनिधि, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि इस संसार में एक होती है प्रकृति, एक होती है नियति, एक होती है गति और एक होता है गंतव्य. प्रकृति हमारा स्वभाव हमारा नेचर है. हमें बचपन बहुत सुहाना लगता है. हमें माता-पिता, गुरुजनों का प्यार बहुत अच्छा लगता है. हमें रिश्ते बहुत अच्छे लगते हैं लेकिन वह ठहरते नहीं हैं. कोई भी मां अपने बच्चों को कितना भी प्यार कर ले लेकिन कोई ने ठहरा नहीं सकती. जब यह सब हमारे जीवन में ठहर नहीं सकते तो समाधान हमारी यादें, हमारी बातें एवं हमारे बीच की भावनाएं बरकरार रहनी चाहिए, अतीत तो ठहरा हुआ है, लेकिन वर्तमान को ठहरा नहीं सकते, लेकिन वर्तमान को खूबसूरत बनाकर उसे यादगार बना सकते हैं.

उन्होंने कहा कि हमारे मन में यह संकल्प रहना चाहिए कि कोई भी [illegible] चाहिए एवं हड़पने या हथियाने का प्रयास नहीं करना चाहिए, ऐसे में कुछ छूटता है तो संतुष्टि भाव से छूटता है. नियति हमेशा आगे बढ़ती है. नदी की नियति है पहाड़ को छोड़ना पहाड़ को तोड़ना या पहाड़ को पत्थर बनने की जरूरत नहीं है नदी कहीं भी रहे किंतु पहाड़ से नाता नहीं टूटता. अपने सामने अपनों को जाते देखना बहुत कष्टकारी होता है. लेकिन नियति को रोका नहीं जा सकता. नियति घटित होकर रहती है. उन्होंने कहा कि संवेदना की कोख से प्रेम जन्म लेता है. संवेदना की कोख से समस्त सद्गुणों का जन्म होता है एवं निष्ठा की कोख से सारे दुर्गुणों का जन्म होता है. मां प्रेम की मूल है, आधार है. जीवन में बहुत कुछ सीखने की जरूरत नहीं है. केवल प्रेम एवं ईमानदारी सीख जाए सब हो जायेगा. प्रेम एवं ईमानदारी के अलावा दुनिया में कुछ भी सीखने की जरूरत नहीं है. यह मातृ दिवस यह परिवार दिवस इन्हीं सब चीजों को जीवन में उतारने के लिए मनाया जाता है. उन्होंने कहा कि लिव इन रिलेशनशिप कमिटमेंट से बचने का तरीका है. दूसरा समलैंगिक विवाह है. तीसरा सबसे बड़ा कारण स्वार्थ एवं अहंकार है. स्वार्थ एवं अहंकार ने परिवार व्यवस्था को तोड़फोड़ डाला, नष्ट भ्रष्ट कर डाला है. स्वार्थ व अहंकार जीवन का प्रदूषण है. परिवार व्यवस्था का अर्थ है विश्वास एवं प्यार की प्रगाढ़ता. आज परिवार खत्म होते जा रहे हैं एवं काउंसलर व साइकोलॉजिस्ट बढ़ते जा रहे हैं. हमें हम सब को जरूरत है इन सब चीजों में सुधार लाने की. तभी परिवार व्यवस्था सुचारू रूप से चल पाएगा. इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ एवं विभिन्न संस्कार हुए. साथ हीविशिष्ट अतिथि के रूप में तारणी पांडेय एवं उनके भाई तुष्मय पांडेय मौजूद रहे.

अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के आध्यात्मिक प्रयोग पूरे देश में एक दिन एक साथ 23 मई को गुरुवार प्रातः आठ बजे से 12 बजे दोपहर तक [एक] कुंडीय नये घरों में होगी.

संबोधित करते डॉ अरुण जायसवाल.

सत्र में मौजूद श्रद्धालु.

स्वार्थ और अहंकार से टूटता है परिवार

संबोधित करते ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल ● जागरण

संगोष्ठी में मौजूद श्रद्धालुगण ● जागरण

संवाद सूत्र, जागरण● सहरसा: रविवार को शहर के गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित किया गया। सत्र को संबोधित करते हुए शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि इस संसार में एक होती है प्रकृति और एक होती है नियति एक होती है गति और एक होता है गंतव्य। प्रकृति यानी [ह]मारा स्वभाव हमारा नेचर। हमें बचपन बहुत सुहाना लगता है; हमें माता-पिता, गुरुजनों का प्यार बहुत अच्छा लगता है। हमें रिश्ते बहुत अच्छे लगते हैं। किंतु यह ठहरते नहीं है। जब यह सब हमारे जीवन में ठहर नहीं सकते तो समाधान क्या है। समाधान है हमारी यादें। हमारी बातें और हमारे बीच की भावनाएं बरकरार रहनी चाहिए। स्वार्थ और अहंकार ने संयुक्त परिवार व्यवस्था को तोडा है। इससे परिवार टूटता है। ऐसे में यदि कुछ छूटता है तो संतुष्टि भाव से छूटता है। कार्यक्रम में प्रो. तारणी पांडेय और उनके भाई तुष्मय पांडेय मौजूद रहे। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में आध्यात्मिक प्रयोग के रूप में पूरे देश में एक दिन एक साथ 23 मई 24 को एक कुंडीय गायत्री यज्ञ नए घरों में होगी।

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में सत्र के दौरान मौजूद युवा। ● हिन्दुस्तान

जीवन मूल्यों को पहचानें युवा

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल नें कहा इस संसार में एक होती है प्रकृति और एक होती है नियति एक होती है गति और एक होता है गंतव्य । उन्होंने कहा प्रेम और ईमानदारी के अलावा दुनिया में कुछ भी सीखने की जरूरत नहीं है। इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ,एवं विभिन्न संस्कार हुए, साथ ही , विशिष्ट अतिथिगण के रूप में तारणी पांडेय और उनके भाई तुष्मय पांडेय मौजूद रहे। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के आध्यात्मिक प्रयोग [पू]रे देश में 23 मई को गुरुवार 8 से 12 बजे तक एक कुंडीय यज्ञ होगी।

संसार में एक होती है प्रकृति और एक होती है नियति एक होती है गति और एक होता है गंतव्य: डॉ. अरुण

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र के दौरानरुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ का हुआ आयोजन

भास्कर न्यूज|सहरसा

रविवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र के दौरान इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ एवं विभिन्न संस्कार संपन्न हुए। ट्रस्टी अरूण कुमार जायसवाल ने कहा कि इस संसार में एक होती है प्रकृति और एक होती है नियति, एक होती है गति और एक होता है गंतव्य। प्रकृति यानी हमारा स्वभाव हमारा नेचर। अतीत तो ठहरा हुआ है लेकिन वर्तमान को ठहरा नहीं सकते ।लेकिन वर्तमान को खूबसूरत बनाकर उसे यादगार बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि नियति हमेशा आगे बढ़ती है नदी की नियति है पहाड़ को छोड़ना पहाड़ को तोड़ना पर पहाड़ को पत्थर बनने की जरूरत नहीं है नदी। कहीं भी रहे किंतु पहाड़ से नाता नहीं टूटता। डॉ जायसवाल ने कहा कि जीवन में बहुत कुछ सीखने की जरूरत नहीं है केवल प्रेम और ईमानदारी सीख जाए, सब हो जाएगा। उन्होंने कहा कि आज परिवार व्यवस्था के समाप्त होने के लक्षण हैं पहला लिव इन रिलेशनशिप। अगर हमारे दिलों में थोड़ी बहुत कीमत बची हुई है, रिश्तों की, जीवन मूल्यों की, तभी हम परिवार व्यवस्था में विश्वास कर पाएंगे और तीसरा सबसे बड़ा कारण है स्वार्थ और अहंकार स्वार्थ और अहंकार ने परिवार व्यवस्था को तोड़फोड़ डाला। आज परिवार खत्म होते जा रहे हैं और काउंसलर और साइकोलॉजिस्ट बढ़ते जा रहे हैं। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में तारणी पांडेय , तुष्मय पांडेय मौजूद रहे।अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में घर-घर गायत्री यज्ञ अभियान के आध्यात्मिक प्रयोग पूरे देश में एक दिन एक साथ 23 मई को गुरुवार प्रातः 8 बजे से 12 बजे दोपहर तक एक कुंडीय नये घरों में होगी।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र के दौरानरुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ को लेकर मौजूद युवा।

अतीत तो ठहरा हुआ है लेकिन वर्तमान को ठहरा नहीं सकतेः डॉ अरुण कुमार जायसवाल

सहरसा शहर/चौथी वाणी। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुण कुमार जायसवाल ने कहा इस संसार में एक होती है प्रकृति और एक होती है नियति एक होती है गति और एक होता है गंतव्य। प्रकृति यानी हमारा स्वभाव हमारा नेचर। हमें बचपन बहुत सुहाना लगता है। हमें माता-पिता, गुरुजनों का प्यार बहुत अच्छा लगता है हमें रिश्ते बहुत अच्छे लगते हैं। किंतु यह ठहरते नहीं है। कोई भी मां अपने बच्चों को कितना भी प्यार कर ले, किंतु कोख में ठहरा नहीं सकती। जब यह सब हमारे जीवन में ठहर नहीं सकते तो समाधान क्या है। समाधान है हमारी यादें, हमारी बातें और हमारे बीच की भावनाएं बरकरार रहनी चाहिए। अतीत तो ठहरा हुआ है लेकिन वर्तमान को ठहरा नहीं सकते। लेकिन वर्तमान को खूबसूरत बनाकर उसे यादगार बना सकते हैं।हमारा बचपन कहीं भाग नहीं गया है। जो था, वह है। लेकिन हम वर्तमान को ठहरा नहीं पाएंगे वर्तमान जब अतीत बनेगा तो उसमें खूबसूरत पल डाल सकते हैं। हमारे मन में यह सदैव रहना चाहिए कि कोई भी चीज हमेशा रहने या ठहरने वाला नहीं है इसलिए हम जहां हैं वहां हमेशा हमें अच्छा करना चाहिए और हड़पने या हथियाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। ऐसे में यदि कुछ छूटता है तो संतुष्टि भाव से छूटता है। नियति हमेशा आगे बढ़ती है। नदी की नियति है पहाड़ को छोड़ना पहाड़ को तोड़ना पर पहाड़ को पत्थर बनने की जरूरत नहीं है। नदी कहीं भी रहे किंतु पहाड़ से नाता नहीं टूटता। यह मातृ दिवस या परिवार दिवस इन्हीं सब चीजों को जीवन में उतारने के लिए मनाया जाता है। इसी क्रम में उन्होंने आगे कहा आज परिवार व्यवस्था के समाप्त होने के लक्षण हैं। पहला लिव इन रिलेशनशिप। कमिटमेंट से बचने का तरीका है। लिव इन रिलेशनशिप।दूसरा समलैंगिक विवाह। जब रिश्ते और जीवन मूल्य पर विश्वास नहीं है। जब शिक्षा और संस्कार पर विश्वास नहीं है तब परिवार कहां आकार ले पाएगा। इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ, एवं विभिन्न संस्कार हुए, साथ ही, विशिष्ट अतिथिगण के रूप में तारणी पांडेय और उनके भाई तुष्मय पांडेय मौजूद रहे। इस अवसर पर तारिणी पाण्डेय ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा गायत्री शक्तिपीठ से मेरा रिश्ता बहुत गहरा है। यहां की बात अलग है यहां की दुनियां अलग है। छोटे-छोटे बच्चे यहां यज्ञ एवं मंत्रोच्चारण करते हैं। अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के आध्यात्मिक प्रयोग पूरे देश में एक दिन एक साथ 23 मई को गुरुवार प्रातः 8 बजे से 12 बजे दोपहर तक एक कुंडीय नये घरों में होगी। इस महान दैवी अभियान में भागीदारी बनकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

मां गर्भ में बच्चे को देतीं है आधे संस्कार

संस, जागरण • सहरसाः रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने मातृ दिवस की विशेषता बताते हुए कहा वही पुत्र बड़भागी हैं जो माता-पिता के वचनों के अनुरागी हैं। माता-पिता के वचनों का पालन करके उन्हें संतुष्ट करनेवाले पुत्र संसार में दुर्लभ है। मां शब्द अपने आप में संपूर्ण है। मातृ दिवस मनाने का उद्देश्य संतान के उत्थान में उनकी महिमा, महान भूमिका को सिर्फ और सिर्फ महसूस करना है। इस एहसास के साथ जीने मात्र से जीवन परिपूर्ण हो जाता है। मां ही बच्चे की पहली गुरू होती है। कहा कि परम पुज्य गुरुंदेव के अनुसार माता ही हो अगर अज्ञान तो पुत्र कैसे बने महान। माता ही निर्माता होती है। मां आधे संस्कार तो अपने बच्चे को गर्भ में हीं दे देती है। उन्होंने कहा गीता के अनुसार मां की सेवा से मिला आशीर्वाद सात जन्मों के पापों को नष्ट कर देता है। एक मां ही प्रसव की पीड़ा को सहन कर बच्चों को जन्म देती है। इस पीड़ा की सहन कर मां के चेहरे पर संतोषजनक मुस्कान होती है। सनातन धर्म में मां का स्थान भगवान से भी ऊपर दिया गया है। आजकल की सबसे बड़ी बिडंबना है कि मां तो दिखती है पर मातृत्व नही दिखता है। आज के समय में मातृत्व को जगाना सबसे बड़ी जरूरत है।

इस सृष्टि की मूल पहचान मां ही होती है। उन्होंने कहा कि आज कल की संतान अपने मां-बाप को बोझ समझकर वृद्धाश्रम में छोड़ आते हैं। उन्हें आज के दिन अपने गलतियों पर पछतावा करते हुए अपनी भूल का एहसास करते हुए अपने-अपने मां बाप को वापस अपने घर लाने के लिए कदम उठाना चाहिए। इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ,एवं विभिन्न संस्कार हुए, जिसमें अन्नप्राशन तथा विवाह दिवस संस्कार हुआ।

संबोधित करते ट्रस्टी • जसौजन्यः शक्तिपीठ

प्रेम और ईमानदारी के अलावा दुनिया में कुछ भी सीखने की जरूरत नही : डॉ अरुण कुमार जायसवाल

मीडिया दर्शन/सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा इस संसार में एक होती है प्रकृति और एक होती है नियति एक होती है गति और एक होता है गंतव्य । प्रकृति यानी हमारा स्वभाव हमारा नेचर। हमें बचपन बहुत सुहाना लगता है। हमें माता-पिता, गुरुजनों का प्यार बहुत अच्छा लगता है हमें रिश्ते बहुत अच्छे लगते हैं। किंतु यह ठहरते नहीं है। कोई भी मां अपने बच्चों को कितना भी प्यार कर ले, किंतु कोख में ठहरा नहीं सकती। जब यह सब हमारे जीवन में ठहर नहीं सकते तो समाधान क्या है। समाधान है हमारी यादें, हमारी बातें और हमारे बीच की भावनाएं बरकरार रहनी चाहिए। अतीत तो ठहरा हुआ है लेकिन वर्तमान को ठहरा नहीं सकते ।लेकिन वर्तमान को खूबसूरत बनाकर उसे यादगार बना सकते हैं। हमारा बचपन कहीं भाग नहीं गया है ।जो था, वह है ।लेकिन हम वर्तमान को ठहरा नहीं पाएंगे वर्तमान जब अतीत बनेगा तो उसमें खूबसूरत पल डाल सकते हैं। हमारे मन में यह सदैव रहना चाहिए कि कोई भी चीज हमेशा रहने या ठहरने वाला नहीं है इसलिए हम जहां हैं वहां हमेशा हमें अच्छा करना चाहिए और हड़पने या हथियाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। ऐसे में यदि कुछ छूटता है तो संतुष्टि भाव से छूटता है।नियति हमेशा आगे बढ़ती है।नदी की नियति है पहाड़ को छोड़-ना पहाड़ को तोड़ना पर पहाड़ को पत्थर बनने की जरूरत नहीं है। नदी कहीं भी रहे किंतु पहाड़ से नाता नहीं टूटता। अपने सामने अपनों को जाते देखना बहुत कष्टकारी होता है किंतु नियति को रोका नहीं जा सकता ।निय-ति घटित होकर रहती है।उन्होंने आगे कहा परिवार के सदस्य कहीं भी रहे पर परिवार की दूरी मन ही होती है परिवार की दूरी प्रेम होता है मां संवेदना होती है और संवेदना की कोख से प्रेम जन्म लेता है। संवेदना की कोख से समस्त सद्गुणों का जन्म होता है और निष्ठा की कोख से सारे दुगुर्णों का जन्म होता है। मां प्रेम की मूल है, आधार है । उन्होंने इसी क्रम में आगे कहा जीवन में बहुत कुछ सीखने की जरूरत नहीं है केवल प्रेम और ईमानदारी सीख जाए, सब हो जाएगा।प्रेम और ईमानदारी के अलावा दुनिया में कुछ भी सीखने की जरूरत नहीं है। यह मातृ दिवस या परिवार दिवस इन्हीं सब चीजों को जीवन में उतारने के लिए मनाया जाता है। इसी क्रम में उन्होंने आगे कहा आज परिवार व्यवस्था के समाप्त होने के लक्षण हैं ।पहला लिव इन रिलेशनशिप। कमिटमेंट से बचने का तरीका है ।लिव इन रिलेशनशिप। दूसरा समलैंगिक विवाह ।जब रिश्ते और जीवन मूल्य पर विश्वास नहीं है ।जब शिक्षा और संस्कार पर विश्वास नहीं है तब परिवार कहां आकार ले पाएगा।अगर हमारे दिलों में थोड़ी बहुत कीमत बची हुई है। रिश्तो की, जीवन मूल्यों की, तभी हम परिवार व्यवस्था में विश्वास कर पाएंगे और तीसरा सबसे बड़ा कारण है स्वार्थ और अहंकार। स्वार्थ और अहंकार ने परिवार व्यवस्था को तोड़फोड़ डाला। नष्ट भ्रष्ट कर डाला । उन्होंने इस क्रम को जारी रखते हुए कहा स्वार्थ और अह-ंकार प्रदूषण है ।मनुष्य के जीवन में जब स्वार्थ और अहंकार होता है। तब हम हर चीज को अपने नजरिए से देखने लग जाते हैं। मैं और मेरा परिवार को नहीं व्यक्तित्व को भी नष्ट कर देता है ।परम पूज्य गुरुदेव ने भी कहा है प्यार और सहकार से भरा पूरा परिवार ही धरती का स्वर्ग होता है ।परिवार व्यवस्था का अर्थ है कि विश्वास और प्यार की प्रगाढ़ता। आज परिवार खत्म होते जा रहे हैं और काउंसलर और साइकोलॉजिस्ट बढ़ते जा रहे हैं। सच तो यह है कि हम विकसित तो हुए हैं किंतु इसमें प्रेम खो गया विश्वास खो गया परिवार खो गया विकास के संबंधी दौर में अंदर का आकाश हो गया ।हमें हम सब को जरूरत है इन सब चीजों में सुधार लाने की तभी परिवार व्यवस्था सुचारू रूप से चल पाएगा। अन्यथा हम और आज की शांति दौर में फिसलते चले जाएंगे ।इस अवसर पर शक्तिपीठ में रुद्राभिषेक, हवन-यज्ञ,एवं विभिन्न संस्कार हुए, साथ ही , विशिष्ट अतिथिगण के रूप में तारणी पांडेय और उनके भाई तुष्मय पांडेय मौजूद रहे ।इस अवसर पर तारिणी पाण्डेय ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा गायत्री शक्तिपीठ से मेरा रिश्ता बहुत गहरा है ।यहां की बात अलग है यहां की दुनियां अलग है ।छोटे-छोटे बच्चे यहां यज्ञ एवं मंत्रोच्चारण करते हैं।अखिल विश्व गायत्री परिवार शांति-।कुंज हरिद्वार के तत्वावधान में गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के आध्यात्मिक प्रयोग पूरे देश में एक दिन एक साथ 23 मई को गुरुवार प्रातः 8 बजे से 12 बजे दोपहर तक एक कुंडीय नये घरों में होगी ।इस महान दैवी अभियान में भागीदारी बनकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

पतरघट पुलिस ने तीन शराबी को क्या गिरफ्तार, भेजा न्यायालय

मीडिया दर्शन/ पतरघट सहरसा। शराब पीकर हंगामा कर रहे तीन लोगों को पुलिस ने अलग अलग जगहों से गिरफ्तार किया है। थानाध्यक्ष पुनि अजय कुमार पास-।वान ने बताया कि शुक्रवार को शराब पीकर हंगामा कर रहे पतरघट वाड नंबर 09 निवासी मो० सोएब पिता मो० हासिम। गोलमा पश्चिम वार्ड नंबर 8 निवासी शंभू झा पिता बलभद्र झा ।कहरा टोला वार्ड पांच राकेश सादा पिता बौआ सादा।को पुअनि राजकिशोर प्रसाद पुअनि मदन कुमार पंडित एवं सशस्त्र बल के साथ गिरफ्तार किया गया है ।शराब पीने की पुष्टि होने पर तीनों के खिलाफ उत्पाद अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर न्यायालय भेज दिया गया है।

प्राणायाम के लाभ

प्राणायाम का अभ्यास तनाव, अस्थमा और हकलाने से संबंधित विकारों से छुटकारा दिलाने में मदद करता है।
प्राणायाम से अवसाद का इलाज भी किया जा सकता है।
प्राणायाम के अभ्यास से स्थिर मन और दृढ़ इच्छा-शक्ति प्राप्त होती है।
इसके अलावा नियमित रूप से प्राणायाम करने से लंबी आयु प्राप्त होती है।
प्राणायाम आपके शरीर में प्राण शक्ति बढ़ाता है।
अगर आपकी कोई नाड़ी रुकी हुई हो तो प्राणायाम उसको खोल देता है।
प्राणायाम मन को स्पष्टता और शरीर को सेहत प्रदान करता है।
शरीर, मन, और आत्मा में प्राणायाम करने से तालमेल बनता है।

माह मई में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- श्री मदन किशोर सिंह (DIG,CISF, पटना):- रुद्राभिषेक, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ हेतु।
- श्रीमति रीना सिंह (पटना):- रुद्राभिषेक, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ हेतु।
- तारिणी पाण्डेय (Professor in Delhi University):- रुद्राभिषेक, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ हेतु।
- त्विष्मय पाण्डेय (Private Sector):- रुद्राभिषेक, व्यक्तित्व परिष्कार सत्र, प्राकृतिक चिकित्सा एवं यज्ञ हेतु।

आगामी कार्यक्रम

- **16 जून -गायत्री जयंती**
- **21 जून - अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस**
- **प्रत्येक रविवार व्यक्तित्व परिष्कार सत्र**

भाव पथ

कर ले प्यारे कर ले
गुरू-चरणों के दर्शन कर ले ।
पी ले प्यारे पी ले
उन चरणों के रस पी ले ।।
उसी रस में है आनन्द
इतना ही तू समझ ले ।।
झुक ले प्यारे झुक ले
आज और अभी ही झुक ले ।
जो झुकने से मिलेगा
तने रहने से न मिलेगा ।।
विनय को साथ ले ले
वैराग्य मन में रख ले ।
मुड़ ले प्यारे मुड़ ले
आज और अभी ही मुड़ ले ।।
कैसे मिलेंगे गुरु चरण
इस हेतु जतन तू कर ले ।
हो जाएगा जनम यह सार्थक
जो मिल जाएँगे गुरु चरण ।।
जहाँ भी दिखें गुरु चरण
वहीं तू धुनि रमा ले ।
एक वही यहाँ तर पाया
जो हो गया गुरु चरणों का ।।
भज ले प्यारे भज ले
उन्हीं गुरु चरणों को ।
मुक्ति धाम वे ही चरण हैं
बस इतना बोध तू कर ले ।।

- डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	:	**06478-228787, 9470454241**
Email	:	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	:	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	:	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA**
		https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39
		https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en
		https://www.kooapp.com/profile/gayatri7AJ0S6
		https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en
		https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/